ISSN: 2349-7637 (Online)
Volume-1, Issue-2, September 2014
RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal
Research Paper
Available online at: www.rhimrj.com

सांस्कृतिक पर्यावरण और भारतीय संस्कृति

Dr. Rakesh R. Patel
Associate Professor,
Children's University,
Gandhinagar, Gujarat India
rrpatel_1970@yahoo.in

सांस्कृतिक प्रदूषण पर विचार करते समय सर्वप्रमथ इसकी परिभाषा की और ध्यान जाना स्वाभाविक है। यदि उसकी व्युत्पत्ति की दृष्टि से विचार किया जाए, 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु से 'संस्कृति' शब्द निष्पन्न होता है। इस आधार पर यह समस्त मानवता को विशेषता प्रदान करने से सम्बन्धित है।

संस्कृति शब्द सम् + कृ इन दो शब्दों से मिलकर बना है। 'सम्' का अर्थ है 'सद्गुण सम्पन्न' और कृति का अर्थ है 'रचना' अर्थात् सद्गुण सम्पन्न रचना।

टायलर के अनुसार '''संस्कृति एक ऐसी जटिल समष्टि है, जिसमें वे सब ज्ञान, विश्वास कलाएं नैतिक भावनाएं, कानून, प्रथाएं व अन्य क्षमताएं सम्मिलित है, जिन्हे मनुष्य समाज का सदस्य होने के नाते अधिगत करता है।''

मैकाइवर और पेज के अनुसार ''हमारे रहन-सहन के तरीकों में, हमारे विचार करने के तरीकों में, हमारे दैनिक व्यवहारों एवं सम्बन्धों में, हमारी कला में, हमारे साहित्य में, हमारे धर्म में, हमारे मनोरंजन व आमोद-प्रमोद में : हमारी प्रकृति की जो अभिव्यक्ति होती है, उसी को संस्कृति कहते हैं।

रॉफ लिंटन के अनुसार, ''संस्कृति सीखे हुए व्यवहारो तथा व्यवहारों के परिणाम का वह समग्र रुप है जिसके निर्माणकारी तत्त्व किसी सामाजिक व्यवहार का एक ऐसा प्रारूप है जिसे व्यक्ति समाज में रह कर सीखता है।''

इसका अर्थ है कि संस्कृति मानव का वह अर्जित व्यवहार है जो वह सामाजिक जीवन व्यतीत करने के लिए सीखता है। चिन्तन द्वारा अपने जीवन को सरस, सुन्दर और कल्याणमय बनाने के लिए मनुष्य जो यत्न करता है उसका परिणाम संस्कृति के रूप में प्रकट होता है। मनुष्य धर्म का जो विकास किया, साहित्य, संगीत और कला का जो सूजन किया, सामूहिक जीवन को विकसित कर सुखी बनाने हेतु जिन पारस्परिक सम्बन्धो, प्रथाओं, रीतियो रूढ़ियों और संस्थाओं आदि का निर्माण किया-उन सबका समावेश हम 'संस्कृति' में करते है।

स्पष्ट है कि पर्यावरण वेद अन्तर्गत उन सभी तत्त्वों का समावेश किया जाता है जो प्राणियो के जीवन को प्रभावित कर उन पर अपनी छाप छोड़ देते हैं।

पर्यावरण का वर्गीकरण कई प्रकार से किया गया है –

मैकाइवर के अनुसार पर्यावरण के तीन भेद है –

१. भौतिक (Physical)

2014, RHIMRJ, All Rights Reserved

२. आर्थिक (Economic)

३. सामाजिक (Social)

बरनार्ड के अनुसार, ''पर्यावरण के निम्न चार प्रकार है –

पर्यावरण

भौतिक (Physical)	जीवन-सम्बन्धी (Biological)	सामाजिक (Social)	संश्लिष्ट या संस्थाभूत (Composite or Institutionalized)

ऑगबर्न और निमकाफ ने पर्यावरण के केवल दो वर्गो का निरुपण किया है –

१. प्राकृतिक (Natutal)

२ मनुष्यकृत (Man-Made)

अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मनुष्य अनेक प्रकार के आर्थिक संगठनों में संगठित होता है, जिनके गद्य विशेष प्रकार के आर्थिक सम्बन्ध होते हैं। धर्म, चिन्तन, विचार, व्यवहार, प्रथा, रूढ़ि, परम्परा आदि के कारण भी मनुष्यों में अनेक सम्बन्धो की स्थापना होती है, अत: मनुष्यकृत पर्यावरण को हम दो वर्गो में विभक्त कर सकते है –

(१) आर्थिक (२) सांस्कृतिक।

सांस्कृतिक पर्यावरण से हमारा अभिप्राय उन सांस्कृतिक तत्त्वो से है जो प्राणियों के जीवन को प्रभावित कर उन पर अपनी छाप छोड़ देते हैं। धर्म, चिन्तन, व्यवहार, कला, साहित्य, संगीत, रीति रिवाज, प्रथा आदि सांस्कृतिक पर्यावरण के अन्तर्गत आते हैं जो मनुष्य के अचार-विचार, विश्वास व रुचि आदि को प्रभावित करते हैं :

वस्तुत: सांस्कृतिक पर्यावरण एक वृहद्संप्रत्यय है जिसमें पर्यावरण के सभी पक्ष प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सन्निहित हैं जैसे –

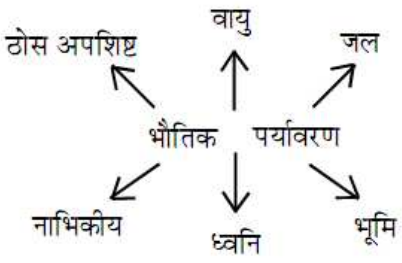

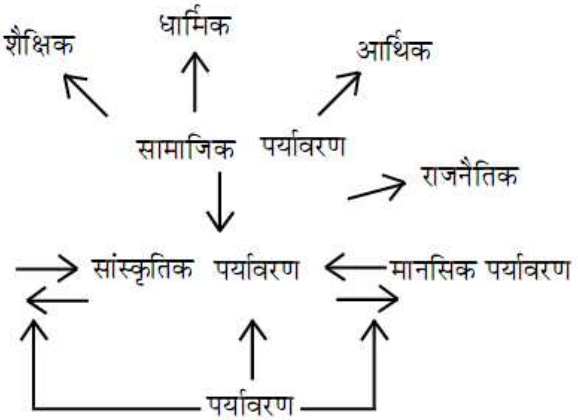

उपर्युक्त रेखाचित्र से स्पष्ट है कि सांस्कृतिक पर्यावरण सामाजिक पर्यावरण का ही एक अंग है परन्तु पर्यावरण संतुलन की दृष्टि से यह घटक अत्यधिक महत्त्वपूर्णण है क्योंकि सांस्कृतिक पर्यावरण एक ऐसी धुरी है जिसके चहूँ और अन्य समस्त पर्यावरणीय पक्ष स्थित रहते है। अत: सांस्कृतिक पर्यावरण के सन्तुलित होने पर स्वत: ही समस्त पर्यावरण-प्रदूषणों (भौतिक प्रदूषण, धार्मिक प्रदूषण, आर्थिक प्रदूषण, शैक्षिक, राजनैतिक व मानसिक प्रदूषण) पर नियन्त्रण हो जाएगा। सांस्कृतिक पर्यावरण के दूषित होने पर नैतिक मूल्यों में गिरावट आती है, जिससे मानसिक-प्रदूषण अर्थात् तनाव, भग्नाशा, चिन्ता, स्वार्थ, लालच, कुंठा आदि जन्म लेते हैं जो धार्मिक पर्यावरण में धार्मिक

2014, RHIMRJ, All Rights Reserved
ISSN: 2349-7637 (Online)

उन्माद, हिंसा, दंगे आदि के रूप में, आर्थिक पर्यावरण में चोरी, लालफीताशाही, मिलावट आदि के रूप में व राजनैतिक पर्यावरण में दल-बदल, भ्रष्टाचार व तुष्टीककरण के रूप में ह्रास उत्पन्न करता है।

अत जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाली तथा समाज के लिए समस्याएँ उत्पन्न करने वाली मानवी गतिविधियां जो संस्कृति में विकृतियाँ उत्पन्न करती है, का संस्कृति में विलय ही सांस्कृतिक प्रदूषण कहलाता है।

सांस्कृतिक प्रदूषण के कारण ही प्राकृतिक पर्यावरण का अवनयन हुआ है। पर्यावरण-संरक्षण हेतु आज हमें पुनः अपनी भारतीय संस्कृति की और ध्यान आकर्षित करना होगा जो आज निरन्तर बढ़ रहे सांस्कृतिक प्रदूषण पर नियंत्रण करने की सफल पथप्रदर्शिका है अतः आवश्यक है कि संस्कृति के अध्येता पर्यावरणीय समस्याओं के निराकरण में भारतीय संस्कृति की भूमिका का महत्त्व समझें और इसके प्रति चेतना उत्पन्न करने में योगदान दें।

१. भारतीय संस्कृति में वृक्षारोपण –

विष्णु स्मृति में वृक्षारोपण को पुण्य कर्म बताते हुए कहा गया है –

वृक्षारोपयितुर्वृक्षाः परलोके पुत्रा भवन्ति।
वृक्षप्रदो वृक्षप्रसूनैर्देवान् प्रीणयति–
फलैश्चातिथीन् छाययाचाभ्यागतान्
देवे वर्षत्युदकेन पितृन।
पुष्प प्रदानेने श्रीमान् भवति।
कूपारामतडागेषु देवतायतनेषु च।
पुनः संस्कारकर्ता च लभते मौलिकं फलम्॥

अर्थात् जो मनुष्य वृक्षों का आरोपण करता है वे वृक्ष परलोक में उसके पुत्र होकर जन्म लेते हैं। वृक्षो का दान करने वाला वृक्षों के पुष्पों के द्वारा देवो को प्रसन्न करता है। फलों के द्वारा अतिथियों को सन्तुष्ट करता है और मेघ के बरसने पर छाया द्वारा अभ्यागतों को तथा जल से पितरों को प्रसन्न करता है। पुष्पों का दान करने से समृद्धिशाली होता है। कुआँ, उद्यान, तलाब और देवायतन का पुनः जीर्णोद्वार कराने वाला नूतन निर्माण करने के समान ही पुण्य फल पाता है।

इसके विपरित जो वृक्षों को नष्ट करता है, उसकी निन्दा-भर्त्सना की गई है। ऋग्वेद में ऋषि ने कहा है –

मा का कम्बीर मुहहो वनस्पतिन शस्तोर्वि हि नीनशः।
मोत सूरो अह एवा वन ग्रीवा आदधते वेः॥

ऋग्वेद ०६-०४३-१७

अर्थात् जिस प्रकार दुष्ट बाज पक्षी दूसरे पखेरुओं की गर्दन मरोड़कर उन्हें दुःख देता है और मार डालता है तुम वैसे न बनो और इन वृक्षो की दुःख न दो, इनका उच्छेदन न करो। ये पशुपक्षियां और जीव-जन्तुओं को शरण देते हैं।

वृक्षों की महिमा का वर्णन करते हुए भगवान् कृष्ण ने गीता के दसवें अध्याय में कहा है, कि वृक्षों में ''मैं पीपल का वृक्ष हूँ।'' अन्य वृक्षों की तुलना में पीपल के वृक्ष में कार्बन-डाई-ऑक्साइड के शोषण की क्षमता तथा ऑक्सीजन के उत्सर्जन की क्षमता ज्यादा होती है।

मत्स्य पुराण में एक कथा आती है जिसके अनुसार दस कुओं के निर्माण का पुण्य एक तालाब के निर्माण के बराबर तथा दस तालाबों का निर्माण एक सद्गुणीपुत्र के निर्माण के बराबर तथा दस सद्गुणी पुत्र तैयार करने के बराबर पुण्य एक वृक्ष को तैयार करने का माना गया है।

2014, RHIMRJ, All Rights Reserved
ISSN: 2349-7637 (Online)

विष्णु पुराण में उल्लेख है, कि फल-फूल देने वाले वृक्ष को जहाँ विनष्ट किया जाता है वहाँ अनावृष्टि, अतिवृष्टि और दुर्भिक्ष जैसे संकट अवश्यम्भावी है। जिन्हें फुल और धन की रक्षा और वृद्धि करनी हो उन्हें फलदार वृक्षो की रक्षा एवं अभिवृद्धि करनी चाहिए।

'महेश्वरो वटो भूत्वा तिष्ठते' शिव के रूप में वट वृक्ष की पूजा की जाती है।

सुप्रसिद्ध पर्यावरणविद् डॉ. रिचर्ड बेकर के अनुसार समघन वट वृक्षों की वायु में एक विशेष प्रकार की आर्द्रता होती है जिससे उसके आस पास के निवासी स्वस्थ एवं सक्रिय बने रहते है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि प्राचीन समय में वृक्षों की उपयोगिता को समझते हुए ही उनके संरक्षण के लिए वृक्षों को देवी-देवताओं से सम्बन्धित कर पूजनीय बनाया गया था –

सारिणी

देवी देवताओं से सम्बद्ध विभिन्न वृक्ष

क्र. सं.	वृक्ष	सम्बन्धित देवी-देवता
१.	तुलसी	लक्ष्मी, विष्णु
२.	बिल्व	शिव
३.	अशोक	इन्द्र
४.	कदम्ब	कृष्ण
५.	आम	लक्ष्मी
६.	सोम	चन्द्रमा
७.	पीपल	विष्णु, कृष्ण
८.	पलाश	ब्रह्मा
९.	ढाक	बुद्ध
१०.	नीम	शीतला माता, मंसा माता

आयुर्वेदोक्त वृक्षारोपण

''स्वस्थस्य स्वस्थ्यरक्षणम्
आतुरस्य विकारप्रशमनम् च''।

अर्थात् आयुर्वेद का प्रथम सिद्धान्त स्वस्थ पुरुष के स्वास्थ्य की रक्षा करना तथा द्वितीय सिद्धान्त आयुर्वेद के स्वास्थ्य नियमों की पालना न करने पर मनुष्य रुग्ण हो जाए तो उसके विकारो को चिकित्सा द्वारा दूर करना है।

''प्रथम सिद्धान्त स्वस्थ पुरुष के स्वास्थ्य को रक्षा करना ॥'' के लिए ही स्वास्थ्य वृत्तीय निर्देश ऋतुचर्या दिनचर्या, आहार-विहार आदि का विस्तृत विवेचन आयुर्वेद शास्त्रों में वर्णित है। आयुर्वेद शास्त्रों में स्पष्ट निर्दिष्ट है, कि किस ऋतु में कौनसे वृक्ष एवं वनस्पतियाँ लगाई जानी चाहिएं –

बिल्वो निम्बश्च निर्गुन्डी
पिण्डितः सप्तपर्णकः।
सहकारश्च षड्वृक्षैरारूढ़ा
या समस्थला ॥ (मयमते अध्याय ३)

2014, RHIMRJ, All Rights Reserved
ISSN: 2349-7637 (Online)

मय ऋषि ने उक्त सूत्रों में प्रमाणित किया है कि निम्न छः वृक्ष नगर या ग्राम के प्रत्येक आवास में स्वास्थ्य एवं शुद्ध वायु की प्राप्ति के लिए निश्चित रूप से होने चाहिएं –

१. बेल (बिल्व) २. निम्ब (नीम) ३. बहेड़ा ४. आम ५. संभाल् ६. छित्तिवन।

बेल वृक्ष पर्यावरण रक्षा में विशेषतः सहायक है–'बेल वृक्ष' जिसे संस्कृत में 'बिल्व' तथा अंग्रेजी में 'बेगाल किस' की संज्ञा टी गई है। यह हजारों वर्षो से हमारे लिए संजीवनी का काम करता रहा है।

शिवजी के माथे पर बेलपत्र चढ़ाने व जल बढ़ाने के पीछे भी पर्यावरण को दूषित होने से बचाने की भावना प्रमुख है। समुद्र मंथन के समय १४ वस्तुओं में से हलाहल कालकूट विष भी था, जिसकी ज्वाला से विश्व के भस्म होने की आशंका थी। ऐसी स्थिति में भगवान शंकर ने हलाहल 'जहर' को पीकर अपने कण्ठ में अवस्थित कर लिया। इसलिए वे 'नीलकण्ठ' व देवों में 'गहादेव' कहलाए। कहा जाता है कि कालकूट विष से विकिरण रेडियोधर्मी के फैलने की पूरी आंशका थी, अतः उसका शमन करने के लिए ही शिवजी के सिर पर बेलपत्र चढ़ाने की परम्परा बहुत प्राचीनकाल से चली आ रही है।

बेलपत्र के अनेक औषधीय गुण भी हैं। मधुमेह, पागलपन, रक्तचाप इत्यादि में इसके रामबाण औषधि है। अनेक प्रकार के फोड़े फुन्सी, पेट के एवं गर्मी से होने वाले रोग में बेल–फल का शर्बत बहुत उपयोगी है। बेलपत्र शक्तिशाली, रोगरोधक आयुर्वेदिक औषधि भी माने जाते है।

भारत में ही नहीं प्राचीनकाल में शिव पूजा में बेल पत्र की प्रधानता समस्त पश्चिमी एशिया में थी। यहाँ बेलपत्र को देव तुल्य माना गया है।

ओजोन परत में हुए छिद्रो के दुष्पभाव को झेलकर बेल वृक्षों द्वारा पृथ्वी पर बढ़ते तापमान पर नियंत्रण की आशा की जा सकती है। ओजोन परत के छिद्रो से पृथ्वी पर पराबैंगनी इन्फ्रारेड विकिरण के दुष्पभाव बेल वृक्ष कम कर सकते हैं। इस तथ्य का वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशाला में परीक्षण कर रहे हैं।

२. पर्यावरण संरक्षण एवं संस्कृति –

भारतीय संस्कृति मूलतः प्रकृति पूजक रही है। हमारे बेदों उपनिषदों, पुराणों एवं लगभग समस्त प्राचीन ग्रंथों में वृक्षों की वन्दना की गई है। फूलो और फलो का ऋषि–मुनि उपासना के लिए उपयोग करते थे। जीव–जन्तुओं को विभिन्न देवी–देवताओं का वाहक बताकर उन्हें भी पूजनीय बना दिया गया। पुराणों के अनुसार नदियो एवं पर्वतों को भी पूज्य एवं आदरमीय बताया गया है। प्रत्यक्ष रूप से उन्हें तीर्थ की संज्ञा देकर उन्हें भगवान, संत, भक्त, ऋषि–मुनि महात्माओं की तपस्थलियों और साधना का क्षेत्र बना दिया वहीं दूसरी और अप्रत्यक्ष रूप से उनके प्रदूषण की संभावनाओं पर नियंत्रण कर उनके संरक्षण के लिए एक सरल एवं सर्वव्यापक दिशा प्रदान की। वर्तमान समय में सांस्कृतिक प्रदूषण के कारण देवी–देवताओं के प्रति श्रद्धा भाव में कमी आयी है, परिणामस्वरूप मानव ने अपने ही

हाथो से उन नदियों का जल भी प्रदूषित कर दिया जिन्हें माँ की संज्ञा प्रदान की जाती थी और जिनका जल अमृततुल्य माना जाता था। अतः जल प्रदूषण पर नियंत्रण की दृष्टि से पुन नदी–रूपी तीर्थो की महिमा की स्थापना आवश्यक है।

2014, RHIMRJ, All Rights Reserved
ISSN: 2349-7637 (Online)

नदी रूप तीर्थ

क्र.सं.	नदी	सम्बन्ध
१.	गंगा	शिव, शान्तनु और भीष्मपितामह से।
२.	यमुना	श्री कृष्ण की पत्नी कही गई है।
३.	सरस्वती	ब्रह्मा से।
४.	नर्मदा	राजा पुरुकुत्स की पत्नी, शिवशंकर, अग्निदेव की उत्पत्ति स्थल।
५.	गोदावरी	महर्षि गौतम, राम ने इसी के किनारे पंचवटी नामक स्थान पर निवास किया था।
६.	सरयू	राम, अग्नि की उत्पत्ति का स्थान है।
७.	गोमती	राम से।
८.	कावेरी	अग्निदेव की १६ नदी पत्नि में एक है।
९.	साबरमती	कश्यप ऋषि, महात्मा गांधी से।

भारतीय संस्कृति में नदियों के समरूप पर्वतों को भी देवी-देवताओं से सम्बन्धित कर पूजनीय स्थान दिया है। पर्यावरण सन्तुलन की दृष्टि से भी पर्वतों के साथ उनके कटाव सम्बन्धी छेड़-छाड़ करना अनुचित होता है। ये देवतारूप या भगवान का स्वरूप माने जाते है हैं, अतः इनकी पूजा की परम्परा भी सृष्टि के प्रारम्भ से ही चली आ रही है।

भारत के पर्वत

क्र.सं.	पर्वत	देवी-देवताओं से सम्बन्ध
१.	हिमालय	शिव
२.	विन्ध्याचल	शरभंग व अगस्त्य ऋषि की तपस्थली
३.	परिजात	मार्कण्डेय जी को बाल मुकुन्द के दर्शन हुए थे।
४.	मलयगिरी	विष्णु
५.	महेन्द्राचल	परशुराम
६.	चित्रकूट	राम
७.	अरुणाचल	शिव
८.	कामगिरि या कामाख्या	कामाख्या देवी
९.	रैवतगिरि या गिरनार या उज्जयन्त	बलराम, दत्तात्रेय
१०.	गोवर्धन	श्री कृष्ण

(३) सात्विक प्रवृत्तियाँ एवं पर्यावरण –

धर्म के मूल में दया है। करुणा, दया, क्षमा, संवेदना, सहानुभूति तथा सौहार्द आदि गुण एक दया के ही अनेक रूप अथवा उसकी ही शाखा-प्रशाखाएँ हैं। जब तक मनुष्य में इन गुणों का अभाव है, मनुष्य योनि में उत्पन्न होने पर भी उसे मनुष्य नहीं कहा जा सकता। अतः मनुष्य वृत्ति के लिए सात्त्विक प्रवृत्तियाँ आवश्यक हैं। इसके लिए

2014, RHIMRJ, All Rights Reserved
ISSN: 2349-7637 (Online)

निम्नलिखित का निषेध होना चाहिए –

माँसाहार–मांसाहार करने वालों पर क्रूरता का आरोप लगता है। मनु ने तो माँसाहार का समर्थन करने वाले को भी हत्यारा कहकर पुकारा है –

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रय विक्रयी।
संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातका॥ मनुस्मृति ५–५१

माँसाहार का समर्थन करने वाला, माँस भक्षण की अनुमति देने वाला, माँस खरीदने या बेचने वाला, पकाने वाला और खाने वाला, ये सभी हत्यारे कसाई है।

महा भारत में कहा गया है – माँस खरीदने वाला धन से पशु की हत्या करता है, खाने वाला स्वाद द्वारा हत्या करता है, मारने वाला छुरे से हत्या करता है। ये सभी हत्यारे हैं, जो दूसरों का माँस खाकर अपना माँस बढ़ाना चाहते हैं, इनसे नीच और कौन होगा ?

बाइबिल में एक स्थान पर आया है – ''ए देखने वाले। देखता क्या है ? काटे जाने वाले जानवरों के लिए अपनी जुबान खोल।''

अर्थात् व्यक्ति पशु हत्या को न सहन करे वरन निरीह प्राणियों के कष्ट मिटाने के लिए माँसाहार के विरुद्ध आन्दोलन करें।

कुरान में लिखा है कि– ''हरा पेड़ काटने वाले, मनुष्यों की खरीद–फरोख्त करने वाले, जानवरों को मारने वाले तथा परस्त्रीगामी को खुदा माफ नहीं कर सकता। खुदा उसी पर रहम करता है, जो उसके बनाए जानवरों पर दया दिखाता है।''

स्वासथ्य पर दुष्प्रभाव –

डॉक्टर हेग ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'डाइट एण्ड फूड' में लिखा है – ''शाकाहार से शक्ति उत्पन्न होती है और माँस खाने से उत्तेजना बढ़ती है। लन्दन की 'वेजीटेरियन एसोसियेशन' ने माँसाहारी और शाकाहीर लोगो पर अनुसन्धान करके बताया कि माँसाहारियों की अपेक्षा शाकाहारी लोग अधिक श्रम करते हैं, कम बीमार पड़ते है और दीर्घजीवी होते हैं। मानसिक क्षेत्र मे भी शाकाहारियों की अपेक्षा माँसाहारी अधिक उदण्ड, क्रोधी, मन्दबुद्धि और अपराधी मनोवृत्ति के पाए गए।

इस सन्दर्भ में ऋग्वेद में कहा गया है –

दधिष्वा जठरे सुतं सोममिन्द्र वरेण्यम्।
तव धुक्षास इन्दवः॥

अर्थात् हमारा आहार ऐसा होना चाहिए जिससे हमारी बुद्धि, अवस्था और बल में निरन्तर वृद्धि होती रहे।

पुष्टिकारक आहार क्षमताओं की वृद्धि करेगा और तत्त्वहीन आहार उनका ह्रास कर देगा। माँसाहार अति अमानवीय भोजन है। मनुष्य की शरीर रचना व प्रकृति दोनों ही इसके अनुकूल नहीं है अतः जो मनुष्य माँस का सेवन करते हैं, वे अनेक प्रकार के रोगों से धिरे रहते हैं।

डॉ. अर्नेस्ट क्रासकी ने बताया है कि ''मानव शरीर की रचना माँसाहारी प्राणियों के समान नहीं है। इसकी रचना शाकाहारी प्राणियों के समान है। शाकाहारी प्राणियों की भोजन पचाने वाली आँते लम्बाई में माँसाहारियों से बड़ी होती हैं। प्रकृति से इसका सम्बन्ध बताते हुए उन्होंने बताया कि माँस में कैल्शियम और कार्बोहाइट्रेटस की कमी होती है। इसके कारण माँस में शीघ्र ही सड़न पैदा होने लगती है। माँसाहारी प्राणियों की आँते करीब १० फुट और मनुष्य की आँते ४८ फुट लम्बी होती हैं। मानव की इन लम्बी आँतो में भोजन के पचने से लेकर मल विसर्जन तक

2014, RHIMRJ, All Rights Reserved
ISSN: 2349-7637 (Online)

करीब २४ घण्टे लग जाते हैं। इतने लम्बे समय तक साग सब्जी का आहार बिना किसी हानि के शरीर में रह सकता क्योंकि इसमें कैल्शियम की मात्रा काफी अधिक होती है। किन्तु माँस प्राय: ८-१० घंटो में सड़ने लगता है। मानव की लम्बी आंतों में संचित होकर यह सड़ांघ पैदा करने का कारण बन जाता है। अत: प्रकृति के विरुद्ध तथा हानिकारक आहार माँस भक्षण का त्याग करना चाहिए। इस दृष्टि से याज्ञवत्क्य स्मृति का यह वाक्य हृदयंगम करने योग्य है –

"सवांन्कामानवाप्नोति तपमेध फलं तथा।
गृहेपि निवासत्विन्दो मुनि माँस विवर्जनात्॥"

अर्थात् जो गृहस्थ माँस का त्याग कर देता है, वह मुनि के समान है, उसे अश्वमेघ यज्ञ का फल अनयास ही प्राप्त हो जाता है और उसकी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती है।

उपयुक्त सन्दर्भ में जीवों पर की जाने वाली हिंसा पर नियंत्रण करने की द्रष्टि से पशु-पक्षीयो का सम्बन्ध प्राचीन काल में विभिन्न देवी-देवताओ से स्थापित कर उनके संरक्षण की व्यवस्था की गई थी।

देवी-देवताओं से सम्बद्ध जीव

क्र. सं.	पशु एवं पक्षी	सम्बन्धित देवी-देवता
१.	शेर	दुर्गा
२.	कल हंस	ब्रह्मा
३.	हाथी	इन्द्र गणेश
४.	नादियाँ	शिव
५.	चूहा	गणेश
६.	हंस	सरस्वती
७.	गरुड़	विष्णु
८.	मोर	कार्तिकेय
९.	हिरण	वायु
१०.	कुत्ता	भैरव
११.	बन्दर	हनुमान, राम
१२.	घोड़ा	सूर्य
१३.	उल्लू	लक्ष्मी
१४.	गिद्ध	शनि
१५.	गधा	शीतला

मादक द्रव्यों का सेवन-नशे की लत की बुराई को समझकर वेदों में भी उसको निंदनीय और त्याज्य बतलाया है। ऋग्वेद में एक स्थान पर कहा है –

सप्त मर्यादा: कवयमतिक्षुस्तासामेकामिदभ्यं हुरोऽगात।

(ऋ.१.५६)

सप्त मर्यादा-अर्थात् चोरी, व्यभिचार, हत्या, गर्भपात, असत्य निन्दनीय कर्म और नशा में एक का भी उल्लंघन

2014, RHIMRJ, All Rights Reserved
ISSN: 2349-7637 (Online)

करने वाला पापी होता है।''

एक अन्य स्थान पर नशा करने वालों की उपमा देते हुए लिखा है –

हत्सु पीतासो युद्धयन्ते दुर्मदासो न सुरायाम ।

(ऋ.८.२.१२)

'मादक पदार्थों का सेवन करने वाले निर्लज्ज होकर बकते-झकते, लड़ते-झगड़ते और अशिष्ट आचरम करते हैं।

इस सन्दर्भ में पदम पुराण में कहा गया है –

धूम्रपानरत विप्रं दानं कुर्वन्ति ये नराः।
दातारो नरकं यान्ति ब्रह्मणो ग्राम शूकरः ।

अर्थात् – ''जो व्यक्ति धूम्रपान करने वाले ब्राह्मण को दान देता है तो वह देने वाला नर्क को जाता है और ब्राह्मण ग्राम शूकर बनता है।''

मनुस्मृति में लिखा है–

सुरावै मलमन्नानां पाप्मा च मलमुच्यते ।
तस्मात् ब्राह्मण राजन्यौ वैश्यश्च न सुरां पिबेद् ॥

अर्थात् – ''मदिरा अन्न का मल है। पाप को भी मल कहा जाता है। इसलिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि सभी भले लोगों को इसका व्यवहार नहीं करना चाहिए।''

इसी सन्दर्भ में आगे मनुस्मृति में कहा है –

अज्ञानाद्वारूणीं पीत्वा संस्कारेणैव शुद्धयति ।
यतिपूर्वमनिर्देश्यं प्राणान्तिकमिति स्थितिः ॥

अर्थात् – ''यदि भूल से या धोखे से मदिरा पी ली जाए तो उसका प्रायश्चित करने से शुद्धि हो सकती है। पर जो जान-बूझ कर उसका प्रयोग करता है, उसका प्रायश्चित तो प्राण-त्याग ही है।

सांस्कृतिक प्रदूषण एवं नैतिक मूल्य - भारतीय संस्कृति पर भौतिकवाद के प्रहार के परिणामस्वरूप जो मानव त्याग की प्रतिमूर्ति हुआ करता था वही आज स्वकेन्द्रित हो गया है। सत्य का स्थान असत्य ने, अपरिग्रह की भावना का स्थान संग्रह की भावना ने, अहिंसा का स्थान हिंसा ने और संतोष का स्थान असंतोष ने ले लिया हैं। आज का मानव स्वार्थ लालच, झूठ आदि के माध्यम से उत्तरोत्तर स्वयं की वृद्धि करना चाहता है। अपने अधिकारों के लिए अपने कर्तव्यं एवं दूसरों के अधिकारों की बलि जढ़ाने में उसे तनिक भी हिचकिचाहट नहीं होती है। यही कारण है, कि आज हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार, लालफीताशाही का सर्प विष उगल रहा है। चारों ओर नैतिक पतन की महामारी व्याप्त है। परिवारों में, समाज में एवं राष्ट्र में प्रत्येक व्यक्ति-दूसरे व्यक्ति को अपना शत्रु समझता है, परिणामस्वरूप दुश्चिन्ता, मानसिक तनाव, कुंठा, हीनभावना, भग्नाशा आदि मानसिक रोगों का शिकार बन मानव मानसिक प्रदूषण के साथ-साथ सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भौतिक पर्यावरण को निरन्तर दूषित करने में लगा हुआ है।

2014, RHIMRJ, All Rights Reserved
ISSN: 2349-7637 (Online)